International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 107-108

चित्रा मुद्गल के साहित्य में चित्रित आर्थिक संदर्भ में सामाजिक यथार्थ

पिंकी शर्मा

Extension lecturer, Department of Hindi, Ch. Bansi Lal Govt. College, Loharu, Bhiwani, Haryana, India

सरांश
चित्रा मुदद्ल जी ने अपने साहित्य में निम्न, मध्यम व उच्च वर्ग का अर्थ (धन) के संदर्भ में यथार्थमय चित्रण बखूबी प्रस्तुत किया है। जहाँ निम्न वर्ग बेबस, लाचार व मजबूर होकर स्वयं को असहाय एवं असुरक्षित महसूस करता है, मध्यम वर्ग उच्च वर्ग जैसा बनने के लिए भरकस प्रयासरत रहता है और उच्च वर्ग समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं ताकत के बलबूते पर दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश करता है।

मूल शब्द: चित्रा मुद्गल, सामाजिक यथार्थ।

प्रस्तावना
समकालीन महिला लेखिकाओं की परम्परा में चित्रा मुद्गल एक चर्चित हस्ताक्षर हैं। चित्रा जी ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों और समस्याओं का समग्र अध्ययन करके उसे अपनी लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इसलिए चित्रा जी का कथा– साहित्य सामाजिक यथार्थ का जीवित दस्तावेज प्रस्तुत करता है।

यह तो सर्वविदित हैं कि हमारे समाज का मूलभूत ढाँचा निम्न, मध्यम , और उच्च वर्ग से मिलकर बना है जिसमें आर्थिक कारक मुख्य रूप से इन तीन वर्गों को प्रभावित करता हैं। अर्थ (धन) के अभाव में निम्न वर्ग और मध्यम वर्ग ताउम्र मेहनत करते हैं परन्तु उच्च वर्ग अर्थ के बल पर ऐशो–आराम की जिन्दगी व्यतीत करते हैं। अब हम बात करते हैं उस निम्न वर्ग कि जो दो वक्त की रोटी भी नही जुटा पाते परिणाम स्वरूप वे गलत कार्यो जैसे– शराब पीना या बेचना, जुआ खेलना, बच्चों से भीख मंगवाना, बच्चों को बेचना व पत्नी को वेश्यावृति की ओर धकेलना आदि गैरकानूनी धंधों की ओर रूख कर लेते हैं। चित्रा जी ने निम्न वर्ग के इस यथार्थमयी स्थिति को अपनी तूलिका से कैनवास पर उतारा हैं। उनकी कई कहानियां इस तथ्य का जीता जागता उदाहरण हैं।

मजदूर वर्ग के शराब आदि के खान–पान का यथार्थ "गिल्टी रोजेस" कहानी में चित्रित हुआ है, "जेल में सजा काट रही गुनाबाई ने अपने पति गमकू के बारे में उनसे भेंट करने गई समाज सेविका को बताया– उसका पति कभी क्लीनर रहा था, अब निठल्ला और दारूडिया हो गया था। वह उससे इस बात के लिए झींकती–लड़ती रहती कि उसकी अनुपस्थिति में जुआरी–शराबी, ठेला–ड्राईवरो को लेकर घर न आया करे। और न उनके संग बैठ, बच्चियों के सामने दारू पीते हुए ताश– पत्ती खेला करे।"[1]

कभी–कभी निम्न वर्ग की हालत इस कदर बिगड़ जाती हैं कि वे पैसे के आभाव में "बच्चो को बेचने" जैसा घिनौना अपराध भी कर देते हैं। लेखिका कि कहानी "बलि" इसी कटु यथार्थ को उकेरती है, "पैसे की कमी में मजदूर गुइयादीन ने अपने किशोर बेटे करूआ को अपने उस मालिक ठाकुर बलभद्र सिंह को बेच दिया, जिसके पास वह खुद नौकरी करता हैं। ठाकुर बलभद्र सिंह ने गुइयादीन से उसका बेटा लिया तो यह कहकर की वह नौकरी करेगा और बदले में साढ़े तीन एकड़ जमींन भी दे दी, लेकिन असलियत में ठाकुर ने करूआ की बलि देने के लिए ही उसके पिता से लिया था। बाद में बलभद्र सिंह ने करूआ की बलि दे भी दी।"[2]

निम्न वर्ग कि विडम्बना यह है कि अर्थाभाव स्थिति का असर नारी–वर्ग पर भी अत्यधिक पड़ता हैं जिसके कारण कई बार महिलाओं को रोजी–रोटी के लिए मजबूर होकर वेश्यावृति का धंधा अपनाना पड़ता हैं। चित्रा जी अपने उपन्यास "आंवा" में निम्न वर्ग के इस सच पर कटाक्ष किया है। मजदूर महिलाओं की रोजी–रोटी के लिए "श्रमजीवा" संस्था की संचालिका शाहबेन ने कहा– "पहले में छोकरी लोगो को बेलनहारी नई बनाती होती। पिच्छे तीन लोगो का केस पता पड़ा। वो धंधे पर निकलने पर लगीं.....बापू।"[3]

निम्न वर्ग की तरह ही कई बार मध्यम वर्ग भी आर्थिक रूप से अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करता है। मध्यम वर्ग में भी पारिवारिक स्तर पर बेरोजगारी, पति– पत्नी के रिस्तो में टूटन, तलाक जैसी समस्याएँ देखने को मिलती है। मध्यम वर्ग में स्वालंबन के चलते नौकरीपेशा महिलाओं की हर महीने मिलने वाली आय का मोह उनके पति और परिवारजन छोड़ नहीं पाते, चाहे इसके लिए बच्चों को परेशानी सहनी पड़े। चित्रा जी की "स्टेपनी" कहानी में यह यथार्थ चित्रित हुआ है– "नौकरी कर रही आभा जब गर्भावस्था के दौरान नौकरी छोड़ने की सोच रही होती हैं, तभी उसका पति विनोद ऐसा करने से मना करता है। गर्भावस्था के आखिरी महीनों में उसने सोचा था– "बच्चा पालना और नौकरी करना साथ–साथ संभव नहीं। नौकरी छोड़ देगी। बच्चा जब स्कूल जाने लगेगा, तब पुनः विचार करेगी नौकरी के विषय में। लेकिन निश्चय दृढ होने से पूर्व ही आर्थिक दवाब और आत्मनिर्भता की कचोट के चलते विवश हो उठा। तभी पति विनोद ने कहा," नौकरी आसानी से नहीं मिलती, संभल जाएगा सब। दीदी आ रही हैं। जचगी के लिए, आगे–पीछे नौकरानी भी ढंग की मिल जायेगी। पूरे समय के लिए न सही, आंशिक समय के लिए ही सही। अभी तो तुम्हारे हाथ में दो–दो आय आ रही हैं, खुलकर खर्च पाती हो, फिर पैसे–पैसे के लिए सोचना होगा।"[4]

मध्यम वर्ग के परिवारों में चूँकि आर्थिक सम्पन्नता नही होती, इसलिए वे चाहते हैं कि परिवार का हर सदस्य कमाएं जिससे घर की आर्थिक स्थिति बेहतर बन सके। यहाँ तक कि मध्यमवर्गीय परिवार में आर्थिक रूप से सक्षम होने तक परिवार नियोजन की बात भी नही सोची जाती। चित्रा जी की कहानी "तकिया" इस द्रष्टिकोण को व्यक्त करती है," शिप्रा और विनोद पति–पत्नी नौकरी करते है। अपना मकान बनाने के चक्कर में उन्होंने तीन साल तक बच्चा पैदा नही किया।"[5]

चित्रा जी ने जहाँ निम्न और मध्यम वर्ग के जिस दर्द को महसूस करती हैं। वही वे आर्थिक रूप से सम्पन्न उच्च वर्ग के जीवन पर कटाक्ष भी करती है, क्योंकि पैसे के बल पर उच्च वर्ग के लोग असम्भव कार्य भी करवाकर अपनी ताकत का परिचय देते हैं जोकि आज का सच है और यही सच प्रस्तुत करती है चित्रा जी की कहानी "जिनावर" जिसमे दो जून की रोटी का जुगाड़ करने वाला असलम अपनी बीमार घोड़ी सरवरी के कंधे पर तांगा लादकर सवारियों को लेकर जब बाजार में सड़क के मध्य जा रहा था, तब एक लड़की कार चलाती हुई आई और उसने कार की टक्कर टाँगे को मार दी। घोड़ी सड़क पर पसर गई और थोड़ी देर बाद दम तोड़ गई। जब पुलिस थाने में असलम ने शिकायत की तो लड़की के पिता ने पुलिस के माध्यम से असलम पर समझौता करने का दवाब बनाया। असलम ने कम पैसे में समझौता करने से मना किया तो हवलदार विशन सिंह ने असलम को थप्पड़ मारे।"[6]

उच्च वर्ग अक्सर सम्पत्ति को लेकर विवादों में उलझ जाता है। चूँकि निम्न वर्ग के पास अधिक सम्पत्ति नहीं होती इसलिए इस वर्ग में इस तरह के विवाद कम ही होते हैं। मध्यम वर्ग भी कभी–कभी सम्पत्ति के विवाद में पड़ जाता है, परन्तु उच्च वर्ग में अधिकतर ऐसा देखने को मिलता हैं। चित्रा जी ने भी अपनी कहानी "लकडबग्घा" में ठाकुर खानदानो के इसी यथार्थ को दर्शाया हैं– "ठाकुर लंबरदार अपने छोटे भाई के लापता होने के बाद उसकी पत्नी पछांहवाली को जानी वाली 18 बीघे जमीन को अपने पास रखना चाहते थे। पछांहवाली के पास सिर्फ एक बेटी थी। एक रात लंबरदार राइफल से पछांहवाली को मारने दौड़े थे, लेकिन परिवार के अन्य सदस्यों ने उसे रोक लिया, लेकिन उसी तड़के खबर आई कि पछांहवाली को तड़के खेतों से लकडबग्घा उठाकर ले गया।"[7] पछांहवाली कि मौत प्रश्नचिन्ह वाली थी। इस तरह लंबरदार के पास से छोटे भाई की 18 बीघे जमीन बंटने से बच गई।

पैसो की अधिकता के कारण उच्च वर्ग द्वारा महंगे होटलों में ठहरकर, भोजन करना और वेटरो को टिप देना उनका शौक बन जाता है। चित्रा जी ने अपने "आंवा" उपन्यास में इसी स्थिति का वर्णन भी किया है,' "जेवरों का बड़ा निर्यातक व्यापारी संजय कनोई जब नमिता के साथ होटल में जाता है तो वेटर को टिप देता है।"[8]

इस प्रकार चित्रा मुदद्ल जी ने अपने साहित्य में निम्न, मध्यम व उच्च वर्ग का अर्थ (धन) के संदर्भ में यथार्थमय चित्रण बखूबी प्रस्तुत किया है। जहाँ निम्न वर्ग बेबस, लाचार व मजबूर होकर स्वयं को असहाय एवं असुरक्षित महसूस करता है, मध्यम वर्ग उच्च वर्ग जैसा बनने के लिए भरकस प्रयासरत रहता है और उच्च वर्ग समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं ताकत के बलबूते पर दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश करता है।

कुल मिलाकर तीनो वर्गों की छवियों का यथार्थमय अंकन करने में चित्र जी ने सफलता हासिल की हैं।

संदर्भ सूचीं

1 मुद्गल, चित्रा, आदि–अनादि (भाग–तीन), दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 260।
2 मुद्गल, चित्रा, आदि–अनादि (भाग–तीन), दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, कहानी–बलि, 2013, पृष्ठ 212।
3 मुद्गल, चित्रा, आवां, दिल्ली, सामयिक प्रकाशन (तीसरा संस्करण), 2002, पृष्ठ 86।
4 मुद्गल, चित्रा, आदि–अनादि (भाग–तीन), दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 60।
5 मुद्गल, चित्रा, एक जमीन अपनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1999, पृष्ठ 30।
6 मुद्गल, चित्रा, आदि–अनादि, दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 44–49।
7 मुद्गल, चित्रा, आदि–अनादि (भाग–तीन), सामयिक प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 35।
8 मुद्गल, चित्रा, आवां, दिल्ली, सामयिक प्रकाशन (तीसरा प्रकाशन), 2002, पृष्ठ276।